Bihar Board Class 7 Sanskrit Notes Chapter 2
कूर्मशशककथा

कूर्मशशककथा Summary

[इस पाठ में एक कछुए और एक खरहे की कथा है । दोनों मित्र थे तथा एक वन में सरोवर के निकट रहते थे । उनमें एक अन्य सरोवर के पास पहँचने की प्रतिस्पर्धा हई। खरहा तो अपनी तेज गति के अहंकार में कछ दर चलकर आराम करने लगा किंतु कछुआ धीमी गति से निरन्तर चलता रहा । उसने प्रतिस्पर्धा जीत ली । इस पाठ से शिक्षा मिलती है कि नियमित रूप से परिश्रम किया जाय तो मंद बुद्धि वाला भी जीवन में बहुत आगे निकल सकता है।

चम्पारण्ये सरोवरे .....अहमेव तत्र प्रथम प्राप्स्यामि ।

शब्दार्थ – अरण्ये – जंगल में । सरोवरे – तालाब में । कूर्मः = कछुआ।
निवसति स्म – रहता था /रहती थी । शशकः – खरगोश, खरहा । अभवत् = हुआ । तौ = वे दोनों । स्थित्वा + रह कर । कथयतः – (दोनों ने) कहा। परस्परम् = आपस में । आलापेन = बातचीत के द्वारा । जाता – हुई । एकदा एक बार । कृतवन्तौ – किया (द्वि०व०) । यत् = कि । उपान्ते = (दूसरे) छोर / किनारे पर । गन्तव्यम् – जाना चाहिए । आवयोः = हमदोनों के । कः = कौन । तत्र – वहाँ । गच्छेत् – पहुँचे, जाए । अकथयत् – कहा । अहमेव (अहम् एव) – मैं ही। अहसत = हँसा । त – तो । शनैः-शनैः – धीरे-धीरे । कथम् – कैसे । गमिष्यसि – जाओगे। प्राप्स्यामि = प्राप्त करूंगा, पहुँचूँगा ।

सरलार्थ-चम्पारण्य में तालाब में एक कछुआ रहता था । उसकी मित्रता खरगोश से हो गई । वे दोनों सदा एक साथ रहकर अनेक प्रकार की कथाएँ कहते थे । आपस में बातचीत के द्वारा दोनों में गाढ़ी मित्रता हो गई । एक-बार उन दोनों ने विचार किया कि वन के दूसरे किनारे जाना चाहिए । हम दोनों में कौन पहले पहुँचता है ? कछुआ बोला- मैं ही वहाँ पहले जाऊँगा। खरगोश हँस दिया- तुम तो धीरे-धीरे चलते हो । कैसे पहले वहाँ जाओगे ? मैं ही पहले वहाँ पहुँचूँगा ।

कूर्मः नियमस्य पालकः सदा ..... निरन्तरं कार्येण विजयी अभवत् ।

शब्दार्थ – पालकः – पालन करने वाला । निरन्तरम् – लगातार । चलितः = चल पड़ा । अवस्थितः = रुका हुआ/ पहुँचा हुआ । श्रमेण – परिश्रम से सम्भवति – संभव होता है । मन्थरगतिः = धीमी चाल वाला। क्व = कहाँ । कार्येण = काम से। सरलार्थ-कछुआ नियम का पालन करने वाला और परिश्रमी था । वह धीरे-धीरे किन्तु लगातार चल पड़ा । खरगोश देर तक रास्ते में विश्रामकर पुनः ‘ तीव्र गति से चला । जब वह जंगल के किनारे पहुँचा तो उसने देखा की कछुआ पहले ही पहुंचा हुआ है। खरगोश लज्जित हो गया । सत्य ही कहा गया हैनिरन्तर परिश्रम से असंभव कार्य भी संभव हो जाता है । कहाँ कछुआ की धीमी चाल और कहाँ खरगोश की तीव्र गति । किन्तु लगातार कार्य से कछुआ विजयी हुआ।

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः

https://www.evidyarthi.in/

- चम्पारणये = चम्पा + अरण्ये (दीर्घ सन्धि)
- उपान्ते – उप + अन्ते (दीर्घ सन्धि)
- चासीत् – च + आसीत् (दीर्घ सन्धि)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

स्थित्वा	= √स्था + क्त्वा
जातः	= √जन् + क्त
गन्तव्यम्	= √रम् + तव्यत्
विरम्य	= वि + √रम् + ल्यप्
अभवत्	= √भू लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
कधयतः	= √कथ् + लट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन
कृतवन्तौ	= √कृ + क्तवतु, द्विवचन
गच्छेत्	= √गम् , विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन
अकथयत्	= √कथ् , लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

https://www.evidyarthi.in/